रूसो के शैक्षिक चिन्तन का मूल्यांकन
(Evaluation of Educational Thought of Rousseau)

जहाँ तक रूसो के शैक्षिक चिन्तन और शिक्षा के क्षेत्र में इनकी देन का सम्बन्ध है, पाश्चात्य जगत में प्लेटो और कमेनियस के बाद इनका ही नाम आता है। एक बार तो इनके शैक्षिक विचारों ने शिक्षा जगत में क्रान्ति ही मचा दी थी। परन्तु वास्तविकता यह है कि इनके शैक्षिक विचार जितनी तेजी से शिक्षा जगत में स्वीकार किए गए थे, कुछ दिनों बाद उतनी ही तेजी से अस्वीकार भी कर दिए गए। यहाँ हम इनके शैक्षिक विचारों का आज की दृष्टि से मूल्यांकन कर अपने इस कथन की सत्यता सिद्ध किए देते हैं।

रूसो शिक्षा को प्राकृतिक क्रिया मानते थे। इनका स्पष्टीकरण था कि सीखना मनुष्य की जन्मजात प्रकृति है अतः उसे अपनी प्रकृति के अनुसार ही सीखने देना चाहिए। इनके अनुसार वास्तविक शिक्षा वह है जो बच्चे के प्राकृतिक विकास में सहायक होती है और जिसमें व्यक्ति अथवा समाज द्वारा न्यूनतम निर्देश होता है। इनके अपने शब्दों में—'शिक्षा अन्दर से होने वाला विकास है, बाहर से एक साथ होने वाली वृद्धि नहीं; यह प्राकृतिक मूलप्रवृत्तियों के क्रियाशील होने से विकसित होती है, बाह्य शक्तियों की प्रतिक्रिया के परिणामस्वरूप नहीं' (Education is a development from within, not an accretion from without, it comes through the working of natural instincts and not through response to external forces)।

इसमें दो मत नहीं कि सीखने की इच्छा और सीखने की शक्ति मनुष्य को जन्म से प्राप्त होती है परन्तु सीखता वह तभी है जब उसके और सिखाने वाले के बीच अन्तःक्रिया होती है। दूसरी बात इस सन्दर्भ में यह है कि किसी व्यक्ति को वही सब सिखाया जाता है जो उसका समाज चाहता है और इससे भी बढ़कर बात यह है कि शिक्षा द्वारा मनुष्य को विकास के लिए तैयार किया जाता है और यह कार्य निरन्तर चलता है। इसीलिए आज शिक्षा को एक सामाजिक प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है। साथ ही इसे गतिशील एवं विकास की प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है, एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है जिसके द्वारा कोई समाज अपनी सभ्यता एवं संस्कृति में निरन्तर विकास करता है।

रूसो ने शिक्षा काल को चार स्तरों में बाँटा और चारों काल की शिक्षा के लिए अलग-अलग उद्देश्य निश्चित किए । इनके द्वारा निश्चित शिक्षा के उद्देश्यों को हम इस प्रकार क्रमबद्ध कर सकते हैं— शारीरिक विकास, इन्द्रिय प्रशिक्षण, बौद्धिक विकास, भावात्मक विकास, जीने की कला, अधिकारों की रक्षा और स्वतन्त्र व्यक्तित्व का निर्माण।

रूसो के उद्देश्य सम्बन्धी विचारों को यदि ध्यानपूर्वक देखा-समझा जाए तो उनमें आज की दृष्टि से चार बड़े दोष हैं। पहला यह कि ये शिक्षा के एक स्तर पर किसी एक उद्देश्य की प्राप्ति पर बल देते थे जबकि

Scanned with CamScanner

शिक्षा एक निरन्तर प्रक्रिया है और किसी भी उद्देश्य की प्राप्ति में निरन्तर सहायक होती है। दूसरा यह कि ये मनुष्य को जन्म से सरल और शुद्ध मानते थे और उसके प्राकृतिक विकास पर बल देते थे जबकि वास्तविकता यह है कि मनुष्य जन्म से एक उच्च पशु मात्र होता है, उसे मनुष्य बनाने के लिए उसके सामाजिक विकास की आवश्यकता होती है, उसके सांस्कृतिक विकास की आवश्यकता होती है। तीसरा यह कि इन्होंने शासनतन्त्र और नागरिकता की शिक्षा की आवश्यकता ही नहीं समझी जबकि आज की यह एक बड़ी माँग है। और चौथा दोष यह है कि इन्होंने मनुष्य के नैतिक एवं चारित्रिक और आध्यात्मिक विकास को कोई स्थान नहीं दिया है और आज स्थिति यह है कि लोग भौतिकता से ऊब चुके हैं और वास्तविक सुख और शान्ति की खोज में आध्यात्मिकता की ओर लौट रहे हैं। आज शिक्षा द्वारा मनुष्य के प्राकृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक तीनों पक्षों के विकास पर समान बल देने की आवश्यकता है।

रूसो ने मानव विकास की मनोवैज्ञानिक अवस्थाओं शैशव अवस्था, बाल्य अवस्था, किशोर अवस्था और युवा अवस्था को प्रस्तुत किया और प्रत्येक अवस्था के लिए भिन्न-भिन्न उद्देश्य एवं भिन्न-भिन्न पाठ्यचर्या निश्चित की।

विकास की दृष्टि से मनुष्य को भिन्न-भिन्न आयु स्तरों में बाँटने का रूसो ने जो प्रयास किया है, शिक्षा जगत में उसका महत्त्व अवश्य है पर भिन्न आयु स्तर पर निश्चित शिक्षा के उद्देश्य और पाठ्यचर्या से आज के विद्वान पूर्णरूपेण सहमत नहीं हैं। बच्चों को समाज से दूर रखकर उनकी शिक्षा की बात, जन्म से 5 वर्ष तक केवल शारीरिक विकास पर ध्यान देने के बात, 12 वर्ष तक इन्द्रियों के प्रशिक्षण की बात और फिर भाषा, गणित, इतिहास, भूगोल एवं उद्योग की शिक्षा की बात, आज के विद्वानों को स्वीकार नहीं है। एक ओर समाज, धर्म एवं नीति सबका विरोध और दूसरी ओर एमिल को नीति, धर्म एवं सामाजिकता की शिक्षा देने का विधान, विरोधाभास नहीं तो और क्या है! रूसो से हमने इतना अवश्य सीखा है कि किसी स्तर के बच्चों के लिए पाठ्यचर्या का निर्माण उनकी शारीरिक एवं मानसिक योग्यताओं एवं आवश्यकताओं के आधार पर करना चाहिए। इसके लिए हम उनके ऋणी हैं।

शिक्षा के क्षेत्र से कृत्रिमता दूर करने का रूसो का प्रयास प्रशंसनीय है। इन्होंने कहा कि बच्चों को समाज के कृत्रिम एवं दोषपूर्ण पर्यावरण से दूर प्रकृति की गोद में रखकर उसकी शिक्षा का विधान करना चाहिए। प्रकृति की ओर लौटो (Back to Nature) इनका पहला नारा था। इन्होंने बच्चों को छोटा प्रौढ़ मान कर उन्हें प्रौढ़ों के कर्त्तव्यों का ज्ञान कराने की अनुदेशन एवं कथन पद्धति का विरोध किया। इन्होंने कहा कि बच्चा, बच्चा होता है, छोटा प्रौढ़ नहीं, उसकी शक्ति, रुचि एवं रुझान प्रौढ़ों से भिन्न होती हैं अतः उस पर आदर्शों का बोझ नहीं लादना चाहिए, उसे स्वतन्त्र रूप से, करके सीखने देना चाहिए। करके सीखना एवं स्वानुभव द्वारा सीखना इनका दूसरा नारा था। साथ ही इन्होंने ज्ञानेन्द्रियों द्वारा शिक्षा पर बल दिया। 'ज्ञानेन्द्रियों द्वारा शिक्षा' इनका तीसरा नारा था। 'बच्चों को सीखने में पूर्ण स्वतन्त्रता दो' यह इनका चौथा नारा था और 'बच्चों को उनकी रुचि, रुझान और योग्यतानुसार सीखने के अवसर दो' पाँचवाँ नारा था। बच्चों को पूर्ण स्वतन्त्रता देकर उनके स्वाभाविक विकास में सहायक होना और बच्चों की शिक्षा उनकी जन्मजात रुचि, रुझान एवं आवश्यकतानुसार हो, उनकी यह बात भी आज मानी जाती है।

आज रूसो की इन बातों से सब सहमत हैं कि बच्चों को ज्ञानेन्द्रियों द्वारा सीखने के अवसर दिए जाएँ और उन्हें स्वक्रिया और स्वानुभव द्वारा सीखने के अवसर दिए जाएँ परन्तु उनकी बच्चों को समाज से दूर रखकर प्रकृति को गोद में सीखने के अवसर देने की बात बड़ी अटपटी है और किसी को भी मान्य नहीं है। आज रूसो की यह बात भी सभी मानते हैं कि बच्चों की शिक्षा उनकी रुचि, रुझान और योग्यता पर आधारित होनी चाहिए पर शिक्षा में पूर्ण स्वतन्त्रता की उनकी बात बड़ी अटपटी है। पर कुछ भी हो, रूसो के विचारों के प्रभाव से शिक्षा के क्षेत्र में इन्द्रिय अनुभव (अवलोकन, स्पर्श आदि), क्रिया और स्वयं निर्णय निकालने पर बल दिया जाने लगा और शिक्षा की अनेक नई मनोवैज्ञानिक विधियों— अवलोकन विधि, प्रयोग विधि, अन्वेषण विधि, डाल्टन प्रणाली आदि का जन्म हुआ। इसके लिए हम रूसो के ऋणी रहेंगे।

अनुशासन के सम्बन्ध में रूसो ने दो सिद्धान्त प्रस्तुत किए — पहला पूर्ण स्वतन्त्रता का सिद्धान्त और दूसरा प्राकृतिक परिणामों का सिद्धान्त। पहले सिद्धान्त के अनुसार बच्चों को व्यवहार की पूर्ण स्वतन्त्रता होनी

Scanned with CamScanner

चाहिए और दूसरा सिद्धान्त यह स्पष्ट करता है कि बच्चों के गलत कार्यों के लिए प्रकृति स्वयं दण्ड देती है अतः शिक्षक को उन्हें कोई दण्ड नहीं देना चाहिए।

अनुशासन के क्षेत्र में पूर्ण स्वतन्त्रता का नारा रूसो की भूल ही कही जाएगी। बच्चों को किसी भी समय अपनी इच्छानुसार कुछ भी करने की छूट नहीं दी जा सकती, इससे तो अव्यवस्था ही हाथ लगेगी। इनका यह विचार कि प्रकृति बच्चों के बुरे कार्यों के लिए उन्हें स्वयं दण्ड देगी और वे उन कार्यों को करना छोड़ देंगे जिनसे उनको दुःख मिलेगा, युक्ति संगत नहीं है। मनुष्यों के सहस्रों वर्षों के अनुभव का परिणाम है—उसकी सामाजिक व्यवस्था एवं नैतिकता। मनुष्य के उचित विकास के लिए उसे सामाजिक बन्धनों में रखना ही होगा।

शिक्षक के विषय में रूसो के दो विरोधी विचार हैं — पहला यह कि ये शिक्षकों को भी दोषयुक्त मानते थे और बच्चों को उनसे दूर रखकर प्रकृति की गोद में सीखने देना चाहते थे और दूसरा यह कि ये शिक्षकों से यह अपेक्षा करते थे कि वे बच्चों को प्राकृतिक ढंग से सीखने में उनकी सहायता करें।

समाज एवं सामाजिक संस्थाओं के विरोध में रूसो द्वारा शिक्षक को भी दोषपूर्ण मान लेना उचित नहीं कहा जा सकता। इनका यह विचार भी दोषपूर्ण है कि शिक्षक का कार्य बच्चों के केवल प्राकृतिक विकास में सहायता करना है। हम जानते हैं कि मनुष्य ने प्रकृति पर विजय प्राप्त की है और आज वह प्रकृति का दास नहीं, उसका शासक है। तब शिक्षक का कार्य बच्चों को केवल उनकी प्रकृति के अनुकूल विकास करने में सहायता प्रदान करने तक सीमित कैसे हो सकता है ! शिक्षक को बच्चों को मानव उपलब्धियों से परिचित कराकर उन्हें शीघ्र से शीघ्र उससे आगे बढ़ने के लिए तैयार करना ही होगा। हाँ, रूसो की यह बात आज सभी स्वीकार करते हैं कि शिक्षक को अनुदेशक के रूप में नहीं, पथ-प्रदर्शक के रूप में कार्य करना चाहिए।

रूसो इस युग के पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने व्यक्ति की स्वतन्त्रता की आवाज उठाई। शिक्षा के क्षेत्र में भी ये बच्चों के व्यष्टित्व का आदर करते थे और उनकी शिक्षा की व्यवस्था उनकी रुचि, रुझान और योग्यतानुसार करने पर बल देते थे। रूसो से पहले शिक्षा या तो शिक्षक केन्द्रित थी या पाठ्यक्रम केन्द्रित, रूसो ने इसे बाल केन्द्रित बनाने पर बल दिया।

जहाँ तक बच्चों की शिक्षा उनकी रुचि, रुझान, और योग्यता पर आधारित करने की बात है आज यह बात सभी स्वीकार करते हैं परन्तु बच्चों को अपना विकास अपने तरीकों से करने की स्वतन्त्रता देने सम्बन्धी इनका विचार किसी को मान्य नहीं है। शिक्षा के क्षेत्र में बच्चों को पूर्ण स्वतन्त्रता देने के दुष्परिणाम हम देख ही चुके हैं।

रूसो अपने समय के समाज एवं सामाजिक संस्थाओं से बड़े असन्तुष्ट थे। इन्होंने तत्कालीन विद्यालयों की कठोर नियन्त्रण व्यवस्था का विरोध किया और बच्चों को किसी भी समय अपनी प्रकृति के अनुसार कुछ भी कार्य करने की स्वतन्त्रता देने पर बल दिया। इन्होंने विद्यालयों की समय-सारणी तक का विरोध किया।

रूसो की यह बात तो मान्य है कि विद्यालयों का निर्माण दूषित समाज से दूर प्रकृति की सुरम्य गोद में करना चाहिए। समाज के दोषों को दूर करने का उपाय शिक्षा ही है अतः विद्यालयों का पर्यावरण आदर्श होना चाहिए, समाज के दोषों से मुक्त होना चाहिए। पर उनमें बच्चों को केवल अपनी प्रकृति के अनुकूल विकास करने की स्वतन्त्र सुविधाएँ प्रदान करने की उनकी बात बड़ी अटपटी है। यदि विद्यालयों में किसी प्रकार की समय-सारणी न होगी, उनकी कार्य-प्रणाली निश्चित नहीं होगी और शिक्षक को यह पता नहीं होगा कि उसे क्या, क्यों और कैसे करना है तो विद्यालयों में किसी प्रकार की व्यवस्था सम्भव नहीं होगी और हम बच्चों को एक पशु से अधिक और कुछ नहीं बना सकेंगे। मनुष्य के कार्य की विशेषता उसकी सुनियोजितता ही होती है, अनियोजित कार्यों से मनुष्य विकास के पथ पर बढ़ ही नहीं सकता था।

रूसो शिक्षा को चर्च (धर्म) और राज्य के बन्धन से मुक्त करना चाहते थे। जहाँ तक शिक्षा को चर्च के बन्धन से मुक्त करने की बात है आज पूरा संसार उनके मत से सहमत है, लेकिन राज्य के बन्धन से मुक्त करने का कोई विकल्प दिखाई नहीं देता। आज तो शिक्षा की व्यवस्था करना राज्य का उत्तरदायित्व माना जाता है। पर इस सुधार के साथ कि राज्य व्यक्ति और राज्य, दोनों के हितों को सामने रखकर इसकी व्यवस्था करेगा।

Scanned with CamScanner

रूसो ने जन शिक्षा की आवश्यकता पर तो बहुत बल दिया परन्तु इस शिक्षा की व्यवस्था कौन करेगा, इस विषय में अपना कोई मत नहीं दिया। ऊपर से शिक्षा को चर्च और राज्य के नियन्त्रण से मुक्त करने का नारा और बुलन्द किया। आज जन शिक्षा के सम्बन्ध में रूसो के विचार मान्य नहीं हैं। आज जन शिक्षा से अर्थ स्त्री-पुरुष सभी के लिए सामान्य, अनिवार्य और निःशुल्क शिक्षा से लिया जाता है और इसकी व्यवस्था करना राज्य का कर्त्तव्य माना जाता है।

रूसो के स्त्री शिक्षा सम्बन्धी विचार भी आज मान्य नहीं हैं। ये स्त्रियों को केवल गृह-कार्य की शिक्षा देने के पक्ष में थे जबकि आज स्त्री-पुरुष सभी को सामान्य शिक्षा अनिवार्य रूप से और विशिष्ट एवं उच्च शिक्षा अपनी-अपनी रुचि, रुझान, योग्यता और आवश्यकतानुसार प्राप्त करने के समान अवसर देने पर बल दिया जाता है।

रूसो मनुष्य को जीने की कला सिखाना चाहते थे और इसके अन्तर्गत उसके व्यावसायिक विकास पर बल देते थे। परन्तु वे इसकी शिक्षा की अलग से कोई व्यवस्था करने की बात उस समय नहीं सोच पाए। आज सामान्य शिक्षा के बाद व्यावसायिक शिक्षा शुरू करने पर बल दिया जाता है और इसके लिए अलग से शिक्षण संस्थाओं की स्थापना पर बल दिया जाता है।

धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा के सम्बन्ध में रूसो के विचारों में समरूपता नहीं है। एक ओर इन्होंने अपनी पुस्तक 'सोशल कॉन्ट्रेक्ट' में धर्म और नैतिकता के नाम पर सामान्य जनता के शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई है और दूसरी ओर अपनी पुस्तक 'एमिल' में एमिल (नायक) और सोफिया (नायिका) दोनों के लिए धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा का विधान किया है। सच बात यह है कि ये धर्म विरोधी नहीं थे, धर्म के नाम पर पादरियों द्वारा भोली जनता के शोषण के विरोधी थे।

रूसो का प्रभाव

रूसो एक क्रान्तिकारक विचारक थे। एक बार तो इनके विचारों ने क्रान्ति ही मचा दी थी, परन्तु धर्म, दर्शन समाज और राज्य सभी की आलोचना के कारण इनके विचार जितनी तेजी से स्वीकार किए गए थे, कुछ दिनों बाद वे उतनी ही तेजी से अस्वीकार भी कर दिए गए। परन्तु शिक्षा को मनोवैज्ञानिक आधार प्रदान करने के लिए वे सदैव स्मरण किए जायेंगे। आज प्रायः सभी देशों की शिक्षा मनोविज्ञान पर आधारित है। आज शिक्षा के क्षेत्र में बच्चों की प्रकृति को विशेष महत्त्व दिया जाता है। आज शिक्षा की सम्पूर्ण योजना बच्चों की रुचि, रुझान एवं योग्यता के आधार पर बनाई जाती है। रूसो संसार में रूढ़िवादी शिक्षा के स्थान पर प्रगतिशील शिक्षा के जन्मदाता माने जाते हैं।

उपसंहार

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि रूसो समाज विरोधी नहीं थे, ये तो तत्कालीन दूषित समाज के विरोधी थे जिसमें धनी निर्धनों का और प्रबुद्ध भोले-भाले व्यक्तियों का शोषण कर रहे थे। ये धर्म विरोधी भी नहीं थे, ये तो तत्कालीन धर्म के ठेकेदार पादरियों द्वारा सामान्य जनता के शोषण के विरोधी थे। ये राज्य विरोधी भी नहीं थे, ये तो तत्कालीन तानाशाही राजतन्त्र और कुलीनतन्त्र के विरोधी थे, 'व्यक्ति राज्य के लिए' सिद्धान्त के विरोधी थे और इन्हीं सबके विरुद्ध इन्होंने आवाज उठाई थी जो आगे चलकर फ्रांस की 1789 की क्रान्ति में परिणित हुई और राजतन्त्र एवं कुलीनतन्त्र के स्थान पर लोकतन्त्र की स्थापना में परिणित हुई।

रूसो अपने समय की शिक्षा से भी असन्तुष्ट थे। इन्होंने शिक्षा को चर्च और राज्य के नियन्त्रण से मुक्त करने और उसके द्वारा बच्चों के प्राकृतिक (वैयष्टिक) विकास करने पर बल दिया। इन्होंने शिक्षा के उद्देश्यों, पाठ्यचर्या और शिक्षण विधियों के सन्दर्भ में अपने सुझाव दिए, शिक्षा के क्षेत्र में कठोर अनुशासन (नियन्त्रण) के स्थान पर पूर्ण स्वतन्त्रता का नारा दिया और विद्यालयों को कृत्रिमता से उठाकर उनमें प्राकृतिक पर्यावरण बनाने पर बल दिया। शोषणप्रधान शिक्षा से त्रसित लोगों पर इनके विचारों का प्रभाव पड़ा और यूरोप में शिक्षा जगत

Scanned with CamScanner

में एक भारी क्रान्ति हुई। परन्तु समाज, धर्म, सभ्यता, संस्कृति और राज्य सभी के अस्तित्व को चुनौती देने के कारण यह क्रान्ति आँधी की तरह आई और आँधी की तरह चली गई।

जहाँ तक शिक्षा के सम्प्रत्यय, उसके उद्देश्य और पाठ्यचर्या की बात है आज रूसो के विचार अर्थहीन हो चुके हैं परन्तु उनके शिक्षण सम्बन्धी विचारों का आधार मनोवैज्ञानिक है और वे सभी को मान्य हैं। शिक्षा के क्षेत्र में अनुशासन के स्थान पर पूर्ण स्वतन्त्रता का इनका नारा भी अब अर्थहीन हो चुका है। हाँ, उसका इतना प्रभाव अवश्य है कि शिक्षा के क्षेत्र में कठोर नियन्त्रण और दण्ड व्यवस्था को अच्छा नहीं माना जाता। शिक्षक के विषय में भी रूसो के विचार अब अर्थहीन हो चुके हैं। हाँ, शिक्षार्थी को शिक्षा का केन्द्र बनाने का इनका विचार थोड़े सुधार के साथ माना जाता है। आज शिक्षा जगत में शिक्षक, शिक्षार्थी और पाठ्यक्रम तीनों को समान महत्त्व दिया जाता है। जन शिक्षा, स्त्री शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा के सन्दर्भ में भी अब रूसो के विचार अर्थहीन हो चुके हैं। अब शिक्षा की व्यवस्था करना राज्य का कर्त्तव्य माना जाता है और स्त्री-पुरुष सब के लिए सामान्य शिक्षा की व्यवस्था अनिवार्य एवं निःशुल्क रूप से करने और विशिष्ट एवं उच्च शिक्षा की व्यवस्था उनकी रुचि, रुझान, योग्यता और आवश्यकताओं के आधार पर करने पर बल दिया जाता है। साफ जाहिर है कि आधुनिक शिक्षा पर रूसो का प्रभाव तो अब कम ही है परन्तु आज उसका जो कुछ भी स्वरूप है, रूसो इसकी नींव के पत्थर हैं।

परीक्षण प्रश्न

निबन्धात्मक प्रश्न

1. रूसो की शिक्षा योजना की समीक्षा कीजिए और यह बताइए कि आज के युग में वह कहाँ तक उपयोगी है?
2. रूसो द्वारा प्रतिपादित शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यचर्या और शिक्षण सिद्धान्तों की विवेचना कीजिए।
3. 'शिक्षा के क्षेत्र में रूसो ने बड़े क्रान्तिकारी परिवर्तन किए हैं।' इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं? प्रमाण सहित उत्तर दीजिए।
4. शैक्षिक चिन्तक के रूप में रूसो के विचारों एवं देन का मूल्यांकन कीजिए।

लघुउत्तरीय प्रश्न

5. रूसो ने शिक्षा को किस रूप में स्वीकार किया है?
6. रूसो ने शिक्षा के क्या उद्देश्य निश्चित किए हैं?
7. रूसो की पाठ्यक्रम सम्बन्धी योजना को संक्षेप में प्रस्तुत कीजिए।
8. रूसो के द्वारा प्रतिपादित शिक्षण सिद्धान्तों का परिचय दीजिए।
9. सकारात्मक शिक्षा और नकारात्मक शिक्षा में क्या अन्तर है?

Scanned with CamScanner